समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में
उदय प्रकाश का रचना संसार

SAMAKALEENATA KE PARIPREKSHYA MEIN UDAYAPRAKASH KA RECHANA SANSAR

Thesis submitted to

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

for the award of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY
IN
HINDI

under the Faculty of Humanities

By

THANOOJA THAHA
तनूजा ताहा

Dr. K. AJITHA
(Professor &
Head of the Department)

Dr. K. VANAJA
(Professor, Dean
Faculty of Humanities
Supervising Guide)

Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Kochi-682 022

DECEMBER - 2017

CERTIFICATE

This is to certify that the research work presented in the thesis entitled **"SAMAKALEENATA KE PARIPREKSHYA MEIN UDAYAPRAKASH KA RECHANA SANSAR"** is an authentic record of research work carried out by Mrs. Thanooja Thaha under my supervision at the Dept. of Hindi, Cochin University of Science and Technology, in partial fulfillment of the requirements for the degree of DOCTOR OF PHILOSOPHY in Hindi and that no part of thereof has been included for the award of any other degree.

Dr. K. VANAJA
(Professor, Dean
Faculty of Humanities
Supervising Guide)

Place : Kochi
Date :

DECLARATION

I hereby declare that the thesis entitled **"SAMAKALEENATA KE PARIPREKSHYA MEIN UDAYAPRAKASH KA RECHANA SANSAR"** is bonafide record of the original work carried out by me under the Supervision of Prof. (Dr). K. Vanaja at the Dept. of Hindi, Cochin University of Science and Technology, and no part thereof has been included in any other thesis submitted previously for the award of any degree.

THANOOJA THAHA

माता पिता समान

पूजनीय गुरुवर वनजा जी

एवं

एन. मोहनन जी को

सप्रेम समर्पित.....

प्राक्कथन

साहित्य कालांकित सांस्कृतिक पहचान है। प्रत्येक काल के सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति साहित्यकार की सामाजिक दृष्टि एवं रचना दृष्टि पर आधारित होती है। समय के प्रति प्रतिबद्धता समकालीन रचनाकारों में विशेष रूप से पाई जाती है। इसलिए समकालीन रचनाकारों ने अपने समय की माँग को समझते हुए अपनी ज़मीनी पहचान या स्थानीयता को केन्द्र में रखा। इस स्थानीयता के ज़रिए बहुस्वरता को बनाए रखने की कोशिश समकालीन रचनाकारों का मुख्य मकसद रही है। समकालीन रचनाकार उदय प्रकाश ने समकालीन यथार्थ के नाभिक बिन्दु को पकडकर अपनी रचनाओं में उतारने का साहसपूर्ण कार्य किया है। फलस्वरूप उदय जी ने भूमंडलीय जीवन की भयावह स्थितियों एवं समस्याओं के बीच जूझते आम आदमी को चित्रित कर समकालीनता का बोध अंकित किया है। साथ ही साथ आज की संस्कृति की विषमताओं से हमारा साक्षात्कार कराके नया जीवन बोध देकर सोचने के लिए मज़बूर किया गया है। उनकी रचनाओं की श्रेष्ठता, बोधगम्य भाषा, समय चेतना और संवेदना ने मुझे यह महसूस कराया है कि उनके जैसे समर्थ रचनाकार की समग्र रचनाओं पर गहन चिंतन मनन की आवश्यकता है। इसलिए मैं ने शोध विषय के रूप में उदय प्रकाश की संपूर्ण रचनाओं को ले लिया है।

मेरा शोध विषय है - "समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश का रचना संसार"। अध्ययन की सुविधा के लिए विषय को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है।

पहला अध्याय है 'समकालीनता और उदय प्रकाश'। इसमें समकालीनता, आधुनिकता, समकालीनता एवं आधुनिकता के बीच के संबन्ध को स्पष्ट करते हुए नवऔपनिवेशिक स्थितियों एवं उनके खतरनाक घटक जैसे गाट, विश्वव्यापार संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, उदारीकरण, नवउदारवाद, सेज़, निजीकरण आदि पर विस्तार से चर्चा की गई है। इन तत्वों के आधार पर हमारे सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्रों पर आये हुए परिवर्तनों पर प्रकाश डाला गया है। बाद में समकालीन साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ जैसे भूमंडलीय संस्कृति की चुनौतियाँ, स्त्री विमर्श, विकलांग विमर्श, सांप्रदायिकता का प्रतिरोध आदि पर विस्तार से विचार किया गया है। साथ ही साथ उदय प्रकाश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

दूसरा अध्याय है 'उदय प्रकाश की रचनाओं में नव औपनिवेशिक स्थितियाँ और प्रतिरोध'। भारत उपनिवेश से मुक्त है, लेकिन इसकी दीर्घकालीन परिणितियों से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं। इसी मुक्ति के आर्तनाद के बीच साम्राज्यवादी शक्तियाँ एक अलग मुखौटा पहन कर आयी हैं, वह है नवउपनिवेशवाद। उसके खिलाफ आवाज़ उठाना समकालीन साहित्य अपना फर्ज़ समझता है। इस अध्याय में नवउपनिवेशवाद की छाया में जो संस्कृति पनप रही है उसका पर्दाफाश एवं उसके प्रति आलोच्य रचनाकार की प्रतिरोधी चेतना का विश्लेषण है। साम्राज्यवादी

साजिश का प्रतिरोध उन्होंने स्थानीयता के हर पहलू जैसे गाँव, किसान, आम जनता, श्रमिक, कवि एवं भाषा आदि की साहित्यिक प्रस्तुत के ज़रिए किया है। नवउपनिवेशवाद की use and throw याने फेंकनेवाली संस्कृति पर चर्चा की गई है। उपभोगवादी संस्कृति में सुखवाद की परिकल्पना है। सुखवाद तो इन्द्रियबोध से उत्पन्न होता है। इसलिए हर आदमी अपने इन्द्रियों के प्रति सजग है। सीमातीत इन्द्रियबोध की गिरफ्त में फँसे स्त्री, युवापीढ़ी एवं बुजुर्ग लोगों की मानसिकता पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही साथ विस्थापन के यथार्थों पर चर्चा करके मानसिक विस्थापन एवं विकास योजनाओं के तहत विस्थापित होनेवाली जनता के त्रासदी पूर्ण जीवन की ओर भी इशारा किया गया है। ये सब भूमंडलीकरण की उपज है।

तीसरा अध्याय है 'उदय प्रकाश की रचनाओं में स्त्री, दलित एवं आदिवासी'। इसमें समाज एवं राजनीति में उपेक्षित या हाशिएकृत लोगों का विश्लेषण किया गया है। ये लोग सदियों से तिरस्कृत हैं। लेकिन उनको केन्द्र में लाने का प्रयत्न समकालीन साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति है। याने कि समकालीन साहित्य हाशिएकृत जनता की आत्मपहचान है। इसलिए 'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवतः' की घोषणा करनेवाली भारतीय संस्कृति में स्त्री की असली दशा पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत अध्याय में स्वत्व हनन, पीडित दलित, विश्वविद्यालयों में पीडित दलित युवकों के प्रतिरोध को भी जाहिर किया गया है। साथ ही साथ आदिमानव एवं आदि संस्कृति का पर्याय आदिवासी पर चर्चा करते हुए उनके ऊपर होनेवाले अत्याचारों को उदय जी ने साफ साफ दिखाया। उसमें आदिवासी स्त्रियों का शोषण, आदिवासी विकास योजनाएँ एवं उसके खोखलेपन पर प्रकाश डाला गया है।

चौथे अध्याय 'उदय प्रकाश की रचनाओं में व्यक्ति एवं व्यवस्था' में मानव के सारे सपने चकनाचुर करनेवाली भ्रष्ट व्यवस्था का उदय जी ने प्रतिरोध किया है। आज लोकतांत्रिक व्यवस्था ब्यूरोक्राटों एवं करोड़पतियों के हाथ में है। याने कि लोकतंत्र लोक के लिए तंत्र में बदल गया है। भ्रष्ट राजनीति, पुलिस-व्यवस्था, न्याय व्यवस्था आदि में कालापन भरा पडा है। इन्हीं व्यवस्थाओं को सहायता देने में गुंडागर्दी की भूमिका तो बडी है। इस भ्रष्ट व्यवस्था की हर एक इकाई पर प्रकाश डाला गया है। रचनाकार के अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्य का निषेध आज की सच्चाई है। इसका विश्लेषण भी इस अध्याय में हुआ है।

पाँचवाँ अध्याय 'उदय प्रकाश की रचनाओं में अन्य पहलू' में पिछले अध्यायों में जिनका विश्लेषण हुआ है उनको छोडकर शेष सभी पहलुओं की चर्चा की गई है। इसमें घर-परिवार, पारिस्थितिकी, लोकसंस्कृति, गाँधी चिंतन, इतिहास, सांप्रदायिकता का प्रतिरोध, खलासी, पहरेदार डाकिया जैसे मज़दूर, वृद्ध, बालक आदि के प्रति उदय जी का जो संवेदनात्मक रवैया है उसका पर्दाफाश हुआ है।

छठा अध्याय 'उदय प्रकाश की रचनाओं का शिल्प पक्ष' है। इसमें उदय प्रकाश की रचनाओं के शिल्प एवं भाषा की विशेषताओं को रेखांकित किया गया है। जैसे : शिल्प अर्थ एवं परिभाषा, वस्तु, थल-काल, पात्र-परिकल्पना, संवाद आदि पर प्रकाश डालने की कोशिश की गयी है। साथ ही साथ उनकी शैलीगत विशेषताओं, जादुई यथार्थवाद, आत्मकथात्मक शैली, व्यंग्य शैली, वेरचुअल रियालिटी, डायरी शैली, डॉट्स शैली, एकालाप शैली आदि की भी चर्चा की गयी है। उनकी

भाषा पर विचार करते हुए उनकी रचनाओं में प्रयुक्त चित्र छवि की भाषा, मणिपुरी भाषा, काव्यात्मक भाषा, ध्वन्यात्मक भाषा, असभ्य भाषा, मिश्रित भाषा, अंग्रेजी भाषा, फारसी-उर्दु, प्रतीक आदि को भी पहचानने की कोशिश है। उनका संरचना पक्ष अत्यन्त प्रभावशाली है। यथार्थ की सूक्ष्मता को उघाडने के लिए उदय जी ने नयी शैलियों एवं समकालीनता की भाषा का सहारा लिया है।

अंत में अध्ययन का निचोड 'उपसंहार' में अभिव्यक्त किया गया है। इसके उपरान्त संदर्भ ग्रंथ सूची भी संलग्न है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की निर्देशिका और पथप्रदर्शिका परम आदरणीय प्रोफसर के. वनजा जी के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ जिन्होंने मेरी वैयक्तिक कठिनाइयों की स्थिति में भी इस शोध-प्रबंध को पूर्ण करने के लिए यथासमय आवश्यक निर्देशन और सुझाव दिये हैं। उनकी सतत प्रेरणा, माँ जैसा स्नेह और सहायता से ही यह कार्य पूरा हुआ है। मैं हृदय से उनका आभारी हूँ।

शोध विषय विशेषज्ञ डॉ. एन. मोहनन जी हैं जिन्होंने अपनी व्यस्तता के बीच में भी अमूल्य मार्गदर्शन एवं सहयोग दिए हैं। मैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

हिन्दी विभाग के सभी गुरुजनों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। मेरे प्रिय मित्रों नीतू, जस्ना, लता, अर्चना, अंजू, श्याम, संगीता, प्रत्युषा, सल्मी, सलीना के प्रति मैं आभारी हूँ जिन्होंने इस शोध कार्य को पूर्ण करने में जाने अनजाने में मेरी मदद की है।

कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के दफ्तर एवं पुस्तकालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अध्ययन के दौरान जो सुविधाएँ एवं सहयोग मुझे प्रदान किये हैं उनका स्मरण भी इस संदर्भ में मैं कर रही हूँ।

मेरे पिताजी, मेरी स्नेहमयी माँ, मेरे प्यारे भाई-बहन तस्नीम, तनसीला, सियाद, समीर के प्रति मैं चिर ऋणी हूँ जिनकी सतत प्रेरणा, प्रार्थना एवं प्रोत्साहन का ही फल है यह शोध प्रबन्ध। मेरे पति श्री जाफर का जो प्यार और प्रोत्साहन मुझे हमेशा मिलता रहा उसको शब्दबद्ध करना मेरे वश की बात नहीं है। मेरी प्यारी बेटी रय्याना को भी इस अवसर पर नहीं भूल सकती जो मात्र दो वर्ष की आयु में भी सहयोगी स्वभाव का परिचय देने में पीछे नहीं रही। अंत में सर्वोपरि उस सर्वेश्वर के प्रति मैं आभारी हूँ जिनकी कृपा से यह काम पूरा हो गया है।

मैं यह शोध-प्रबन्ध विद्वानों के सामने सविनय प्रस्तुत कर रही हूँ। इसमें अनजाने में आ गई कमियों और गलतियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

सविनय

कोच्चिन

तनूजा ताहा

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

पहला अध्याय 1-81

समकालीनता और उदय प्रकाश

1.1 समकालीनता का अर्थ
1.2 परिभाषा
1.3 आधुनिकता
1.4 समकालीन परिस्थितियाँ
    1.4.1 नवऔपनिवेशिक स्थितियाँ
1.5 भूमंडलीकरण के खतरनाक घटक
    1.5.1 अंतर्राष्ट्रीय उद्योग
    1.5.2 उदारीकरण (Liberalisation)
    1.5.3 निजीकरण (Privatization)
    1.5.4 नवउदारवाद (Neo Liberalisation)
    1.5.5 विशेष आर्थिक क्षेत्र (Special Economic Zone)
    1.5.6 बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ
    1.5.7 विदेशी पूँजी का निवेश (Foreign Capital Investment)
1.6 आज भूमंडलीकरण को सशक्त बनानेवाले संगठन एवं नीतियाँ
    1.6.1 गाट (GATT - General Agreement on Tariff and Trade)
    1.6.2 विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organisation)
    1.6.3 अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक
1.7 सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य
1.8 राजनीतिक एवं धार्मिक स्थितियाँ
1.9 भारत का आर्थिक परिवेश

1.10 समकालीनता का साहित्य

1.11 विमर्श

1.12 समकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ

- 1.12.1 भूमंडलीय संस्कृति की चुनौतियाँ
- 1.12.2 स्त्री विमर्श
- 1.12.3 दलित विमर्श
- 1.12.4 आदिवासी विमर्श
- 1.12.5 पारिस्थितिक विमर्श
- 1.12.6 बालविमर्श
- 1.12.7 वृद्धविमर्श
- 1.12.8 विकलांग विमर्श
- 1.12.9 सांप्रदायिकता का प्रतिरोध

1.13 समकालीन साहित्य की भाषा

1.14 उदय प्रकाश : व्यक्ति एवं कृतिकार

- 1.14.1 उदय प्रकाश का व्यक्तित्व
  - 1.14.1.1 जन्म
  - 1.14.1.2 माता-पिता
  - 1.14.1.3 परिवार
  - 1.14.1.4 व्यक्तित्व
  - 1.14.1.5 शिक्षा
  - 1.14.1.6 कार्यक्षेत्र
- 1.14.2 उदय प्रकाश का रचना संसार
  - 1.14.2.1 कहानीकार उदय प्रकाश
  - 1.14.2.2 कवि उदय प्रकाश
  - 1.14.2.3 अनुवादक उदय प्रकाश
  - 1.14.2.4 उदय प्रकाश की भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में अनूदित कृतियाँ
  - 1.14.2.5 उनकी अनूदित रचनाएँ

1.15 अन्य पहचान : साहित्यिक अध्ययन एवं यात्राएँ
1.16 निबंध एवं साक्षात्कारों का संकलन
1.17 फिल्म निर्माता - निर्देशक एवं पटकथाकार उदय प्रकाश
1.18 पुरस्कार एवं सम्मान
1.19 निष्कर्ष

दूसरा अध्याय 82-173

उदय प्रकाश की रचनाओं में नवऔपनिवेशिक स्थितियाँ और उसका प्रतिरोध

2.1 साम्राज्यवादी साजिश का प्रतिरोध
2.1.1 स्थानीयता
2.1.2 गाँव
2.1.3 आमजनता
2.1.4 श्रमिक लोग
2.1.5 किसान
2.1.6 स्थानीय कवि
2.1.7 भाषा
2.2 नवऔपनिवेशिक स्थितियाँ
2.2.1 उपभोक्तावाद : भूमंडलीकरण की संस्कृति
2.2.2 उपभोक्तवाद : कुछ परिभाषाएँ
2.2.3 वस्तु में तब्दील होती स्त्री
2.2.4 कार्लगेल बननेवाली स्त्रियाँ
2.2.5 सीमातीत इन्द्रिय बोध
2.2.6 बाज़ारु संस्कृति
2.3 विज्ञापन एवं ब्रांड संस्कृति
2.3.1 विज्ञापन के गिरफ्त में पडी यवापीढ़ी
2.3.2 स्त्रियों की मॉडल बनने की ललक
2.3.3 ब्रांड चीज़ों में स्त्री
2.3.4 विज्ञापन और बुजुर्ग-लोग

2.4 विस्थापन का यथार्थ
2.4.1 विकास योजना
2.4.2 मानसिक विस्थापन
2.5 निष्कर्ष

तीसरा अध्याय 174-228

उदय प्रकाश की रचनाओं में स्त्री, दलित एवं आदिवासी

3.1 स्त्री
3.1.1 स्त्री के विभिन्न रूप
3.1.1.1 माता
3.1.1.2 बहन
3.1.1.3 स्त्री भ्रूणहत्या
3.1.1.4 पत्नी
3.1.1.5 बलात्कार की शिकार होनेवाली स्त्री
3.2 दलित
3.2.1 दलित स्त्री : बलात्कार की शिकार
3.2.2 स्वत्वहनन
3.2.3 प्रतिरोधी दलित युवापीढी
3.2.4 विद्यालयों में शोषित दलित
3.3 आदिवासी
3.3.1 आदिवासी स्त्रियों का शोषण
3.3.2 आदिवासी विकास परियोजनाओं का खोखलापन
3.4 निष्कर्ष

चौथा अध्याय 229-293

उदय प्रकाश की रचनाओं में व्यक्ति और व्यवस्था

4.1 व्यक्ति और व्यवस्था
4.2 लोकतांत्रिक व्यवस्था
4.3 आर्थिक व्यवस्था
4.3.1 संबन्धों का अर्थीकरण

4.4 भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था
4.4.1 राजनीतिज्ञों की गुंडागर्दी
4.5 धार्मिक व्यवस्था
4.5.1 धार्मिक अंधविश्वास एवं दुराचार
4.5.2 ब्राह्मणवाद का विरोध
4.6 न्याय व्यवस्था
4.7 पुलिस व्यवस्था
4.7.1 पुलिस एवं गुंडों का रिश्ता
4.7.2 चोर एवं पुलिस का संबन्ध
4.8 पत्रकार और रचनाकार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का निषेध
4.9 निष्कर्ष

पाँचवाँ अध्याय 294-363

उदय प्रकाश की रचनाओं के अन्य पहलू

5.1 घर-परिवार
5.2 बेरोज़गारी
5.3 शिक्षा का औद्योगीकरण
5.4 साम्प्रदायिकता
5.5 प्रेम
5.6 पारिस्थितिकी
5.7 लोक संस्कृति
5.8 गाँधी चिंतन
5.9 मज़दूर
5.10 बालविमर्श
5.11 वृद्धों का यथार्थ
5.12 इतिहासबोध
5.12.1 इतिहासबोध की परिभाषा
5.13 निष्कर्ष

छठा अध्याय 364-433

उदय प्रकाश की रचनाओं का शिल्प पक्ष

6.1 शिल्प : अर्थ एवं परिभाषाएँ

6.2 उदय प्रकाश की रचनात्मक टेकनिक

6.3 वस्तु

- 6.3.1 भूमंडलीकरण की खतरनाक परिणितियाँ
- 6.3.2 उपभोग संस्कृति
- 6.3.3 गाँव शहर का द्वन्द्व
- 6.3.4 विकास और प्राकृतिक नाश
- 6.3.5 आदिवासियों एवं दलितों की अस्मिता
- 6.3.6 व्यवस्था विरोध
- 6.3.7 साम्प्रदायिकता का विरोध

6.4 थल-काल

6.5 पात्र-परिकल्पना

6.6 संवाद

6.7 रचना शैली

- 6.7.1 जादुई यथार्थ
- 6.7.2 आत्मकथात्मक शैली
- 6.7.3 पत्रात्मक शैली
- 6.7.4 व्यंग्यात्मक शैली
- 6.7.5 उपशीर्षक शैली
  - 6.7.5.1 निबन्धों में उपशीर्षक शैली
  - 6.7.5.2 कविताओं में उपशीर्षक शैली
- 6.7.6 डॉट्स शैली
- 6.7.7 डायरी शैली
- 6.7.8 एकालाप शैली
- 6.7.9 वेरचुअल रियालिटी शैली
- 6.7.10 काव्यात्मक शैली

6.8 मुहावरे
6.9 लोकोक्ति
6.10 भाषा
6.10.1 ध्वन्यात्मकता
6.10.2 जनजीवन से जुडी भाषा/आंचलिक भाषा
6.10.3 चिंतन प्रधान भाषा
6.10.4 मणिपूरी भाषा
6.10.5 सिन्धी भाषा
6.10.6 भोजपुरी
6.10.7 अखबारों की भाषा
6.10.8 चित्र छवि की भाषा
6.10.9 असभ्य भाषा
6.10.10 प्रेम की भाषा
6.10.11 अंग्रेज़ी भाषा
6.10.12 मिश्रित भाषा
6.10.13 अंग्रेज़ी कविता
6.10.14 अरबी-फारसी
6.10.15 समानार्थी शब्द
6.10.16 चिकित्सा क्षेत्र का शब्द
6.10.17 नारे की भाषा
6.11 प्रतीक
6.12 निष्कर्ष

उपसंहार 434-441

परिशिष्ट 442-443

संदर्भ ग्रन्थ सूची 444-460